कबीर दास एक रहस्यवादी कवव और भारत के महान संत, का जन्म वर्ष 1440 में हुआ था और वर्ष 1518 में देहांत हो गया था। इस्लाम के अनसार कबीर का अथष महान होता है। ु कबीर पंथ एक ववशाल धार्मषक समदाय है जो संत मत के संप्रदाय के प्रवतषक के रूप में ु कबीर की पहचान करता है। कबीर पंथ के सदस्यों को कबीर पंथथयों के रूप में जाना जाता है, जजन्होंने परे उत्तर और मध्य भारत में ववस्तार ककया था। कबीर दास के कू ुछ महान लेखन बीजक, कबीर ग्रंथावली, अनराग सागरु , सखी ग्रजन्थ इत्यादद हैं। स्पष्ट रूप से उनके जन्म के माता-वपता के बारे में नहीं पता है, लेककन यह ध्यान ददया जाता है कक वे मजस्लम बु नकरों के बहु ुत गरीब पररवार द्वारा बडे हुए हैं। वह बहुत ही आध्याजत्मक व्यजतत थे और एक महान साध बने। उन्हें अपनी प्रभावशाली परंपराओं और ु संस्कृतत के कारण दतनया भर में प्रर्सद्थध र्मली।ु यह माना जाता है कक उन्होंने बचपन में अपने गरु रामानंद नाम के गु रु से आध्याजत्मक ु प्रर्शक्षण प्राप्त ककया था। एक ददन, वह गरु रामानंद के जानु -माने र्शष्य बन गए। एक महान रहस्यवादी कवव, कबीर दास, भारतीय में अग्रणी आध्याजत्मक कववयों में से एक हैं । उन्होंने लोगों के जीवन को बढावा देने के र्लए अपने दाशषतनक ववचार ददए हैं। भगवान और कमष में एक वास्तववक धमष के रूप में उनकी पववत्रता के दशषन ने लोगों के मन को अच्छाई की ओर बदल ददया है। भगवान के प्रतत उनका प्रेम और भजतत मजस्लम सु फी और दहंदू भजतत दोनों की अवधारणा को पू रा करती है ।

Kabir ke Dohe – कबीर दास के दोहे (1-10)

कबीर कूता राम का..., मुदटया मेरा नाऊ | गले राम
की जेवडी..., जजत खींचे ततत जाऊं ||

कबीर राम के र्लए काम करता है जैसे कुत्ता अपने मार्लक के र्लए काम करता है। राम का नाम मोती है जो कबीर के पास है। उसने राम की जंजीर को अपनी गदषन से बांधा है और वह वहाँ जाता है जहाँ राम उसे ले जाता है।

कामी क्रोधी लालची... इनसे भजतत ना होए | भजतत
करे कोई सूरमा... जाती वरण कुल खोय ||

आप कामक सुखु , क्रोध या लालच के आदमी से ककस तरह की भजतत की उम्मीद कर सकते हैं? वह बहादर व्यजतत जो ु अपने पररवार और जातत को पीछे छोडता है, वह सच्चा भतत हो सकता है।

बैद मुआ रोगी मुआ... , मुआ सकल संसार | एक
कबीरा ना मुआ... , जेदह के राम आधार ||

एक थचककत्सक को मरना है, एक रोगी को मरना है। कबीर की मत्यृ नहीं हु ुई तयोंकक उन्होंने स्वयं को राम को अवपषत कर ददया था जो कक सवषव्यापी चेतना है।

प्रेम न बडी उपजी... , प्रेम न हाट बबकाय | राजा
प्रजा जोही रुचे... , शीश दी ले जाय ||

कोई भी खेत में प्यार की फसल नहीं काट सकता। कोई बाजार में प्रेम नहीं खरीद सकता। वह जो भी प्यार पसंद करता है, वह एक राजा या एक आम आदमी हो सकता है, उसे अपना र्सर पेश करना चादहए और प्रेमी बनने के योग्य बनना चादहए।

प्रेम प्याला जो वपए... , शीश दक्षक्षणा दे | लोभी
शीश न दे सके... , नाम प्रेम का ले ||

जो प्रेम का प्याला पीना चाहता है, उसे अपने र्सर को चढाकर उसका भगतान करना ु चादहए। एक लालची आदमी अपने र्सर की प्रस्तत नहीं कर सकता है । वह केवल प्यार ु के बारे में बात करता है।

दया भाव ह्रदय नहीं... , ज्ञान थके बेहद | ते नर नरक ही
जायेंगे... , सुनी सुनी साखी शब्द ||

उनके ददल में कोई दया नहीं है। ज्ञान प्राप्त करने के श्रम के कारण वे थक गए हैं। वे तनजचचत रूप से नरक में जाएंगे तयोंकक वे कुछ और नहीं बजकक शष्क शब्दों को जानते ु हैं।

जहा काम तहा नाम नहीं... , जहा नाम नहीं वहा काम | दोनों कभू
नही ंर्मले... , रवव रजनी इक धाम ||

वह जो भगवान को याद करता है वह कोई कामक सु ख नहीं जानता है। वह जो भगवान ु को याद नहीं करता है वह कामकु सखों का आनंद लेता है। भगवान और कामुक सु ख ु एकजट नहीं हु ुए तयोंकक सयष और रात का कोई र्मलन नहीं हो सकता।ू

ऊाँ चे पानी ना दटके... , नीचे ही ठहराय | नीचा
हो सो भारी पी... , ऊाँ चा प्यासा जाय ||

पानी नीचे बहता है। और यह हवा में लटका नहीं रहा। जो लोग जमीनी हकीकत जानते हैं वे पानी का आनंद लेते हैं, जो हवा में तैर रहे हैं वे नहीं कर सकते।

जब ही नाम दहरदय धयो... , भयो पाप का नाश |
मानो थचनगी अजग्न की... , परी पुरानी घास ||

एक बार जब आप भगवान को याद करते हैं तो यह सभी पापों का ववनाश करता है। यह सखी घास के ढेर से संपकषू करने वाली आग की थचगं ारी की तरह है।

सुख सागर का शील है... , कोई न पावे थाह | शब्द
बबना साध नहींू ... , द्रव्य बबना नही ंशाह ||

ववनम्रता आनंद का असीम सागर है। कोई भी राजनीतत की गहराई को नहीं जान सकता। जैसा कक बबना पैसे वाला व्यजतत अमीर नहीं हो सकता, एक व्यजतत ववनम्र हुए बबना अच्छा नहीं हो सकता।

Sant Kabir Das ke Dohe – कबीर दास के दोहे (11-20)

फल कारन सेवा करे... , करे ना मन से काम |

कहे कबीर सेवक नहीं... , चाहे चौगुना दाम ||

वह भगवान की सेवा के लिए कुछ नहीं कर रहा है। वह जो कुछ भी करता है उसके बदले में चार गना उम्मीद करता है। वह भगवान का भतत नहीं है।ु

कबीरा यह तन जात है... , सके तो ठौर लगा | कई सेवा
कर साधू की... , कई गोववन्द गुण गा ||

कबीर कहते हैं कक हमारा यह शरीर मत्यृ के करीब पहु ुंच रहा है। हमें कुछ साथषक करना चादहए। हमें अच्छे लोगों की सेवा करनी चादहए। हमें भगवान के गण को याद रखना ु चादहए।

सोना सज्जन साध जनू ... , टूट जुडे सौ बार | दुजषन
कुम्भ कुम्हार के... , एइके ढाका दरार ||

अच्छे लोगों को कफर से अच्छा होने में समय नहीं लगेगा, भले ही उन्हें दर करने के लिए ू कुछ ककया जाए। सोना लचीला है और भंगर नहीं है। यदद उनु के साथ कुछ होता है तो बरे लोग हमेशा के लिए लौट जाते हैं और हमेशा के लिए दु र रह जाते हैं। कू ुम्हार द्वारा बनाया गया मिट्टी का बतषन भंगर होता है और एक बार टु ूट जाने पर वह हमेशा के लिए टूट जाता है।

जग में बैरी कोई नहीं... , जो मन शीतल होय |
यह आपा तो डाल दे... , दया करे सब कोए ||

अगर हमारा ददमाग शांत है तो दतनया में कोई दु चमन नहीं हैं। अगर हमारे पास अहंकार ु नहीं है तो सभी हमारे लिए दयाल हैं।ु

प्रेमभाव एक चादहए... , भेर् अनेक बनाय | चाहे घर
में वास कर... , चाहे बन को जाए ||

आप घर पर रह सकते हैं या आप जंगल जा सकते हैं। यदद आप ईचवर से जडे रहना ु चाहते हैं, तो आपके ददल में प्यार होना चादहए।

साधू सती और सुरमा... , इनकी बात अगाढ | आशा छोडे
देह की... , तन की अनथक साध ||

एक अच्छा व्यजतत, एक मदहला जो अपने पतत की थचता पर जलती है और एक बहादर ु आदमी – इनकी बात ही और है। वे अपने शरीर के साथ तया होता है, इससे थचतंतत नहीं हैं।

हरी सांगत शीतल भय... , र्मतत मोह की ताप | तनर्शवासर
सुख तनथध... , लाहा अन्न प्रगत आप्प ||

जो भगवान को महसस करते हैं वे शांत हो जाते हैं। उन्होंने अपनी गमी को खत्म कर ू ददया। वे ददन-रात आनंददत होते हैं।

आवत गारी एक है... , उलटन होए अनेक | कह
कबीर नहीं उलदटए... , वही एक की एक ||

अगर कोई हमें अपशब्द कहता है, तो हम गाली के कई शब्द वापस देते हैं। कबीर कहते हैं कक हमें ऐसा नहीं करना चादहए। गाली का एक शब्द एक ही रहने दो।

उज्जवल पहरे कापडा... , पान सुपारी खाय | एक हरी
के नाम बबन... , बंधा यमपर जाय ु ||

कपडे बहुत प्रभावशाली हैं, मंह पान सुपारी से भरा है। लेककन तया आप नरक से बचना ु चाहते हैं तो आपको भगवान को याद करना चादहए।

अवगुण कहू शराब का... , आपा अहमक होय |
मानुर् से पशुआ भय... , दाम गाँठ से खोये ||

शराब लेने पर एक व्यजतत अपना संतलन खो देता है। वह जानवर बन जाता है और ु अपने पैसे खचष करता है।

Kabir Das ke Dohe – संत कबीर के दोहे (21-30)

कबीरा गरब ना कीजजये... , कभू ना हार्सये कोय |
अजहू नाव समद्र मेंु ... , ना जाने का होए ||

मत करो, गवष महसस मत करो। दू सरों पर हाँसो मत। आपका ू जीवन सागर में एक जहाज है जजसे आप नहीं जानते कक अगले क्षण तया हो सकता है।

कबीरा कलह अरु ककपना... , सैट संगती से जाय |
दु ुःख बासे भगा कफरे... , सुख में रही समाय ||

यदद आप अच्छे लोगों के साथ जडते हैं तो आप संघर्ो ं और आधारहीन ककपनाओं का ु अंत कर सकते हैं। जो आपकी ददषशा का अंत करेगा और आपके जीवन को आनंददत ु करेगा।

काह भरोसा देह का... , बबनस जात छान मारही | सांस
सांस सुर्मरन करो... , और यतन कुछ नाही ||

इस बात की कोई गारंटी नहीं है कक यह शरीर अगले पल होगा या नहीं। आपको हर पल भगवान को याद करना चादहए।

कुदटल बचन सबसे बुरा... , जासे हॉट न हार | साधू
बचन जल रूप है... , बरसे अमृत धार ||

एक बरे शब्द ने कहा कक दु सरों को पीडा देना इस दू तनया में सबसे बु री बात है। बु रे ु शब्द सनने से ककसी की हार नहीं होती। एक अच्छा शब्द जो दु सरों को र्भगोता है वह ू पानी की तरह है और यह सनने वालों पर अमु ृत की वर्ाष करता है।

कबीरा लोहा एक है... , गढने में है फे र | तादह
का बख्तर बने... , तादह की शमशेर ||

लौह धात से तलवार भी बनती है और बख्तर भी। आप एक ववध्वंसक भी हो सकते हैं ु और रक्षक भी, यह आप पर तनभषर है।

कबीरा सोता तया करे... , जागो जपो मुरार |
एक ददन है सोवना... , लंबे पाँव पसार ||

तम तयों सो रहे हो ु ? कृपया उठो और भगवान को याद करो। एक ददन होगा जब एक पैर को हमेशा के र्लए फैलाकर सोना होगा।

कबीरा आप ठागइए... , और न ठथगये कोय | आप
ठगे सुख होत है... , और ठगे दु ुःख होय ||

ककसी को भी अपने आप को मखष बनाना चादहए , दसरों को नहीं। जो दसरों को मू खष बनाता है वह दखी हो जाता है। खु द को बेवकु फ बनाने में कोई बराई नहीं है तयोंकक वह सच्चाई को जकद या बाद में जान जाएगा।

गारी ही से उपजै..., कलह कष्ट औ मीच । हारर चले
सो सन्त है..., लाथग मरै सो नीच ।।

संत कबीर दास जी कहते हैं कक अपशब्द एक ऐसा बीज है जो लडाई झगडे, दुःख एवम हत्या के क्रूर ववचार के अंकुर को व्यजतत के ददल में रोवपत करता है। अतुः जो व्यजतत इनसे हार मान कर कर अपना मागष बदल लेता है वह संत हो जाता है लेककन जो उनके साथ जीता है वह नीच होता है।

जा पल दरसन साध का ... , ता पल की बर्लहारी |
राम नाम रसना बसे... , लीजै जनम सुधारी ||

तया शानदार क्षण था। मैं एक अच्छे व्यजतत से र्मला। मैंने राम का जप ककया और अपने परे जीवन में अच्छा ककया।

जो तोकू कांता बुवाई... , तादह बोय तू फूल |
तोकू फूल के फूल है... , बंकू है ततरशूल ||

यदद कोई आपके र्लए कांटेदार कैतटस बोता है, तो आपको उसके र्लए एक फूल वाला पौधा बोना चादहए। आपको बहुत से फूल र्मलेंगे। और दसरों के पास कांटे होंगे।

Kabir ke Dohe with meaning in Hindi (31-40)

जो तू चाहे मुजतत को... , छोड दे सबकी आस |
मुतत ही जैसा हो रहे... , सब कुछ तेरे पास ||

यदद आप मोक्ष चाहते हैं तो आपको सभी इच्छाओं को समाप्त कर देना चादहए। एक बार जब आप मोक्ष प्राप्त कर लेते हैं तो आप सब कुछ हार्सल कर लेते हैं।

ते ददन गए अकाथी ..., सांगत भाई न संत | प्रेम
बबना पशु जीवन... , भजतत बबना भगवंत ||

मैंने उन ददनों को बबाषद ककया जब मैं अच्छे लोगों से नहीं र्मला था। बबना प्यार वाला इंसान जानवर होता है। प्रेम के बबना कोई देवत्व नहीं है।

तीर तुपक से जो लादे... , सो तो शूर न होय |
माया तजज भजतत करे... , सूर कहावै सोय ||

धनर् और बाण से लडता हु , वह वीर नहीं है। असली बहादर वह है जो भ्रम को दु र ू भगाता है और भतत बन जाता है।

तन को जोगी सब करे... , मन को बबरला कोय |
सहजी सब बबथध वपये... , जो मन जोगी होय ||

शरीर पर ऋवर् के तनशान लगाना बहुत आसान है लेककन मन पर ऋवर् के तनशान बनाना बहुत मजचकल है। यदद कोई मन के स्तर पर ऋवर् बन जाता ु है तो वह कुछ भी करते समय सहज होता है।

नहाये धोये तया हुआ... , जो मन मेल न जाय |
मीन सदा जल में रही... , धोये बॉस न जाय ||

यदद मन साफ नहीं है तो नहाने और सफाई का तया मतलब है? एक मछली हमेशा पानी में रहती है और उसमें बहुत बरी गंध होती है।ु

पांच पहर धंधा ककया... , तीन पहर गया सोय |
एक पहर भी नाम बबन... , मुजतत कैसे होय ||

मैंने ददन के दौरान अपनी आजीववका कमाने के र्लए कुछ ककया और रात में सो गया। मैंने 3 घंटे के र्लए भी भगवान के नाम का जप नहीं ककया, मैं कैसे मोक्ष प्राप्त कर सकता हूं?

पत्ता बोला वृक्ष से... , सुनो वृक्ष बनराय | अब के
बबछडे न र्मले... , दूर पडेंगे जाय ||

एक पेड से एक पत्ता कहता है कक वह हमेशा के र्लए दर जा रहा है और अब कोई ू पनर्मषलन नहीं होगा।ु

माया छाया एक सी... , बबरला जाने कोय | भागत के
पीछे लगे... , सन्मुख भागे सोय ||

एक छाया और एक भ्रम समान हैं। वे उनका पीछा करते हैं जो दर भागते हैं और उस ू नजर से गायब हो जाते हैं जो उन्हें देखता है।

या दुतनया में आ कर... , छडी डे तू एट |
लेना हो सो र्लले... , उठी जात है पैठ ||

यहां ककसी को भी नहीं घमना चादहए। ककसी भी समय को बबाषद ककए बबना सभी सौदे ू करने चादहए तयोंकक काम के घंटे जकद ही खत्म हो जाएंगे।

रात गवई सोय के..., ददवस गवाया खाय | हीरा
जन्म अनमोल था... , कौडी बदले जाय ||

रात में मैं सोया और ददन में मैंने खाना खाया। इस तरह मैंने अपना परा जीवन गू जार ु ददया, जो हीरे की तरह मकयवान था।ू

Kabir ke Dohe with Hindi meaning (41-50)

राम बुलावा भेजजया... , ददया कबीरा रोय | जो
सुख साधू संग में... , सो बैकंठ न होय ु ||

राम कबीर को बला रहे हैं। कबीर रो रहे हैं। कबीर के अनु सारु , ईचवर के साथ संबंध की तलना में अच्छे लोगों कक संगत का अथधक महत्व है।ु

संगती सो सुख उपजे... , कुसंगतत सो दु ुःख होय |

कह कबीर तह जाइए... , साधू संग जहा होय ||

एक अच्छी संगतत खशी पैदा करती है और एक बु राई दु ख पैदा करती है। अच्छे लोगों के ु बीच हमेशा रहना चादहए।

साहेब तेरी सादहबी... , सब घट रही समाय | ज्यो
मेहंदी के पात में... , लाली राखी न जाय ||

मेरे स्वामी, आपकी महारत सभी प्राणणयों में है। उसी तरह जैसे मेंहदी में लार्लमा होती है।

साईं आगे सांच है... , साईं सांच सुहाय | चाहे
बोले केस रख... , चाहे घौत मंडाय ु ||

ईचवर सत्य को देखता है। भगवान को सच्चाई पसंद है। इससे कोई फकष नहीं पडता, कोई लंबे बाल उगा सकता है या वह सारे बाल मंडवा सकता है।ु

लकडी कहे लुहार की... , तू मतत जारे मोदह |
एक ददन ऐसा होयगा... , मई जरौंगी तोही ||

लकडी एक लोहार से कहती है कक आज अपनी जीववका के र्लए तम मु झे जला रहे हो। ु एक ददन, मैं तम्हें थचता पर जला दु ंगी।ू

ज्ञान रतन का जतानकर... , मादट का संसार |
आय कबीर कफर गया... , फीका है संसार ||

ज्ञान के रत्न की देखभाल करनी चादहए। सांसाररक अजस्तत्व बेकार है। कबीर न ेदतनया ु से मंह मोड र्लया तयोंकक दु तनया फीकी है।ु

ररद्धध र्सद्धध मागं नहींू ... , माँगू तुम पी यह |
तनर्शददन दशषन साध कोू ... , प्रभु कबीर कहू देह ||

कबीर भगवान से भौततक संपदा के र्लए नहीं पछ रहे हैं। वह हमेशा के र्लए अपनी ू दृजष्ट में एक अच्छा व्यजतत होने का पक्ष पछ रहा है।ू

न गुरु र्मकया ना र्सर् भय... , लालच खेकया डाव | दुनयू
बडे धार में... , छधी पाथर की नाव ||

जो लोग लालच से प्रेररत होते हैं वे अपने र्शष्य और गरु का दजाष खो देते हैं। पत्थर की ु एक नाव पर चढते ही दोनों बीच में डूब गए।

कबीर सतगुर ना र्मकया... , रही अधूरी सीख | स्वांग जातत
का पहरी कर... , घरी घरी मांगे भीख ||

जो लोग एक अच्छा गरु नहीं पाते हैं वे अधु रे ज्ञान प्राप्त करते हैं। वे एक ू वैरागी के वस्त्र पहनते हैं और घर-घर जाकर भीख मांगते हैं।

यह तन ववर् की बेलरी... , गुरु अमृत की खान | सीस
ददए जो गुरु र्मले... , तो भी सस्ता जान ||

यह शरीर जहर का एक थैला है। गरु अमु त की खान है। यदद आपको अपना र्सर कृ ुबाषन करके उपदेश र्मलता है, तो यह एक सस्ता सौदा होना चादहए।

Sant Kabir Das ke Dohe in Hindi (51-60)

राम वपयारा छडी करी... , करे आन का जाप |
बेस्या कर पूत ज्यू... , कहै कौन सू बाप ||

यदद कोई ईचवर को भल जाता है और कू ुछ और याद करता है, तो वह एक वेचया के बेटे की तरह है जो यह नहीं जानता कक उसका वपता कौन है।

जो रोऊ तो बल घटी... , हंसो तो राम ररसाई | मनही
मादह बबसरना ू ... , ज्याँ घू ुन काठी खाई ||

अगर मैं रोता हूं, तो मेरा ऊजाष स्तर नीचे चला जाता है। अगर मझे हंसी आती है तो राम ु को ऐसा नहीं लगता। ककया करू अब? यह दववधा मेरे ददल को ददमक की तरह खा जाती ु है।

सुणखया सब संसार है... , खावै और सोवे |

दुणखया दास कबीर है... , जागे अरु रावे ||

दतनया बहु ुत खश हु , वे खाते हैं और सोते हैं। कबीर इतना दखी है कक वह जागता रहता ु है और रोता रहता है।

परबत परबत मै कफरया... , नैन गवाए रोई |
सो बूटी पौ नहीं... , जताई जीवनी होई ||

कबीर ने एक पवषत से दसरे पवषत की खोज की ू , लेककन वह जीवन को बनाने वाली जडी बटी नहीं पा सके। ू

कबीर एक न जन्या... , तो बहु जनया तया होई | एक तै सब
होत है... , सब तै एक न होई ||

कबीर कहते हैं कक आप एक चीज नहीं जानते हैं और आप कई अन्य चीजों को जानते हैं। यह एक बात सभी को परा कर सकती है , ये कई चीजें बेकार हैं।

पततबरता मैली भली... ,गले कांच को पोत |
सब सणखया ाँमें यो ददपै... ,ज्यो रवव ससी को ज्योत ||

अपने पररवार के लए प्रततबद्ध एक मदहला अपन ेपराने वस्त्र और गले में कांच के ु मोततयों की लेस में बेहतर ददखती है। वह अपनी सहेलयों के बीच ऐसे चमकती है जैसे चाँद सतारों के बीच चमकता है।

भगती बबगाडी कार्मया... , इन्द्री करे सवादी | हीरा
खोया हाथ थाई... , जनम गवाया बाडी ||

एक वासनाग्रस्त व्यजतत ने उसकी भजतत को नकसान पहु ुंचाया है और उसके इंददय-अंगों को स्वाद का आनंद मल रहा है। उसने एक हीरे को खो ददया है और जीवन का सार चक गया है। ू

परनारी रता कफरे... , चोरी बबथधता खाही |
ददवस चारी सरसा रही... , अतत समला जादह ू ||

एक परुर् जो दुसरों से संबंथधत मदहला को प्रसन्न करता है , वह रात में चोर की तरह भागता है। वह कुछ ददनों के र्लए सख का मतलब तनका ु लता है और कफर अपनी सारी जडों के साथ नष्ट हो जाता है।

कबीर कर्ल खोटी भाई... , मुतनयर र्मली न कोय | लालच
लोभी मस्कारा... , दटंकू आदर होई ||

यह कलयग का यु ग है। यहाँ एक व्यजतत जो संयम की भावना रखता है वह दु लषभ है। ु लोग लालच, लोभ और त्रासदी से लबरेज हैं।

कबीर माया मोदहनी... , जैसी मीठी खांड | सतगुरु की
कृपा भई... , नहीं तोउ करती भांड ||

भ्रम या माया बहुत प्यारी है। भगवान का शक्र है कक मु झे अपने गु रु का आशीवाषद र्मला ु अन्यथा मैं कोरा होता।

संत कबीर के दोहे दहंदी अथष सदहत (61-70)

मेरे संगी दोई जरग... , एक वैष्णो एक राम | वो है
दाता मुजतत का... , वो सुर्मरावै नाम ||

मेरे केवल दो साथी, भतत और राम हैं। वोमझे भगवान को याद करने और मोक्ष प्रदान ु करने के र्लए प्रेररत करते हैं।

संत न बंधे गाठ्दी... , पेट समाता तेई | साईं सू
सन्मख रही ु ... , जहा मांगे तह देई ||

ज्यादा संचय करने की जरूरत नहीं है। ककसी एक के व्यवहार में हमेशा ईमानदार रहने की जरूरत है।

जजस मरने यह जग डरे... , सो मेरे आनंद | कब
मदहहू कब देणखहू... , पूरण परमानन्द ||

परी दू तनया मौत से डरती है। मु झे मौत देखकर खु शी हु ुई। मैं कब मरूंगा और पणष ू आनंद का एहसास करूंगा?

कबीर घोडा प्रेम का... , चेतनी चढी अवसार | ज्ञान
खडग गदह काल सीरी... , भली मचाई मार ||

चेतना को प्रेम के घोडे की सवारी करनी चादहए। ज्ञान की तलवार मत्यृ का कारण बननी ु चादहए।

कबीर हरी सब को भजे... , हरी को भजै न कोई | जब
लग आस सरीर की... , तब लग दास न होई ||

भगवान सबको याद करते हैं। भगवान को कोई याद नहीं करता। जो लोग कामक सु ख ु के बारे में थचतंतत हैं वे भगवान के भतत नहीं हो सकते।

तया मुख ली बबनती करो... , लाज आवत है मोदह | तुम
देखत ओगुन करो... , कैसे भावो तोही ||

मझे भगवान से कोई अनु रोध कैसे करना चादहए ? वह सब जानता है, वह मेरी कर्मयों को जानता है। इन कर्मयों के साथ वह मझे कैसे पसंद करना चादहए ?

सब काहू का लीजजये... , साचा असद तनहार |
पछपात ना कीजजये... , कहै कबीर ववचार ||

आपको हर ककसी से सच सनना चादहए। कोई पक्षपात ददखाने की जरूरत नहीं है।ु

कुमतत कीच चेला भरा... , गुरु ज्ञान जल होय |
जनम जनम का मोचाष... , पल में दारे धोय ||

एक र्शष्य अज्ञानता के कीचड से भरा है। गरु ज्ञान का जल है। जो भी अशु द्धथधयाँ कई ु जन्मों में जमा होती हैं, वह एक क्षण में साफ हो जाती है।

गुरु सामान दाता नहीं... , याचक सीश सामान | तीन
लोक की सम्पदा... , सो गुरु दीन्ही दान ||

गरु के समान कोई दाता नहीं है और र्शष्य के समान कोई साधक नहीं है। गु रु र्शष्य ु को तीनों लोकों का अनदान देते हैं।ु

गुरु को सर रणखये... , चर्लए आज्ञा मादह | कहै
कबीर ता दास को... , तीन लोक भय नाही ||

वह जो अपने गरु को अपने र्सर पर रखता है और उु सके तनदेशों का पालन करता है, उसे तीनों लोकों में कोई भय नहीं है।

Sant Kabeer Ke Doha in Hindi (71-80)

गुरू मूती गती चंद्रमा... , सेवक नैन चकोर | आठ
पहर तनरखता रहे... , गुरू मूती की ओर ||

जैसा कक एक चकोर हमेशा चंद्रमा को देखता है, हमें हमेशा गरु के ु कहे अनसार चलना ु चादहए।

गुरू सो प्रीती तनबादहया... , जेही तत तनबटई संत |
प्रेम बबना थधग दूर है... , प्रेम तनकत गुरू कंत ||

प्रेम से ही सब कुछ परा हो सकता है।ू

गुरू बबन ज्ञान न उपजई... , गुरू बबन मलई न मोश | गुरू
बबन लाखाई ना सत्य को... , गुरू बबन र्मटे ना दोर् ||

बबना गरु के कोई ज्ञान नहीं हो सकताु , गरु के बबना कोई मोक्ष नहीं हो सकताु , गरु के ु बबना सत्य की कोई प्राजप्त नहीं हो सकती। और बबना गरु के दोर्ोंं को दु र नहीं ककया ू जा सकता है।

गुरू मूतत षअगे खडी... , दुतनया भेद कछू हाही | उन्ही
को पनाषम करी... , सकल ततर्मर र्मदट जाही ||

आपका गरु आपको नेतु त्व करने के र्लए है। जीवन को कैसे ध्वस्त करना है, इस बारे में थचतंा करने की आवचयकता नहीं है। यदद आप अपने गरु के उपदेश का पालन करते हैं तो वहां अंधेरा नहीं होगा।

मूल ध्यान गुरू रूप है... , मूल पूजा गुरू पाव | मूल
नाम गुरू वचन हाई... , मूल सत्य सतभाव ||

अपने गरु के रूप को देखें। अपने गु रु के चरण कमलों की पु जा करें। अपने गू रु के वचनों को सनें और स्वयं को सत्यता की जस्थतत में बनाए रखें।

साधु शब्द समद्र हु ै... , जामे रत्न भराय | मंद
भाग मुट्ठी भरे... , कंकर हाथ लगाये ||

साध द्वारा कहा गया एक अच्छा शब्द सागर जजतना गहरा है। एक मखष र्सफष मू ट्ठी भर रेत हार्सल करता है।

पूत वपयारौ वपता कू ... , गोहनी लागो धाई | लोभ
र्मथाई हाथथ दे... , अपन गयो भुलाई ||

एक बच्चा अपने वपता को बहुत पसंद करता है। वह अपने वपता का अनसरण करता है और उसे पकड लेता है। वपता उसे कुछ र्मठाई देते हैं। बच्चा र्मठाई का आनंद लेता है और वपता को भल जाता है। हमें ईचवर को नहीं भू लना चादहए जब हम उसके एहसानों का आनंद लेते हैं।

जा कारनी मे ढाँढती ... , सन्मुख र्मलया आई | धन
मैली पीव ऊजला... , लागी ना सकौ पाई ||

मैं उसे खोज रहा था। मैं उनसे आमने-सामने र्मला। वह शद्ध है और मैं गंदा हु ं। मैं उसके चरणों में कैसे झक सकता हु ं?

भारी कहौ तो बहु दरौ... , हलका कहु टू झूत | माई का
जानू राम कू ... , नैनू कभू ना दीथ ||

अगर मैं कहूं कक राम भारी हैं, तो इससे मन में भय पैदा होता है। अगर मैं कहूं कक वह हकका है, यह बेतका है। मैं राम को नहीं जानता तयोंकक मैंने उन्हें देखा नहीं था।

दीथा है तो कस कहू... , कह्य ना को पततयाय | हरी
जैसा है तैसा रहो... , तू हशी-हशी गुन गाई ||

जजन लोगों ने राम का वणषन करने की कोर्शश की है, उन्हें अपने प्रयासों में असफल होने पर पछताना पडता है। मझे उसका वणषन करने में कोई परेशानी नहीं हु ुई, मैं खशीु -खशी ु उसके गण गाऊंगा।ु

Kabir ke Dohe in Hindi (81-90)

पहुचेंगे तब कहेंगे..., उमडेंगे उस ठ्ठाई | अझू बेरा
समंड मे..., बोली बबगूचे काई ||

जब मैं दसरे ककनारे पर पहू ुंचंगा तो मैं इसके ू बारे में बात करूंगा। मैं अभी सागर के बीच में नौकायन कर रहा हूं। मरने का मरने के बाद देखना चादहए, अभी जीवन जीने पे ध्यान देना चादहए.

मेरा मुझमे कुछ नही..., जो कुछ है सो तोर |
तेरा तुझको सउपता..., तया लागई है मोर ||

मेरा कुछ भी नहीं है मेरे पास जो कुछ भी है वह ईचवर का है। अगर मैं उसे दे दं जो ू उसका है, तो मझे कु ुछ महान करने का कोई श्रेय नहीं है।

जबलग भागती सकामता..., तबलग तनफषल सेव |
कहई कबीर वई तयो र्मलई..., तनहकामी तनज देव ||

जब तक भजतत सशतष होती है तब तक उसे कोई फल नहीं र्मलता। लगाव वाले लोगों को कुछ ऐसा कैसे र्मल सकता है जो हमेशा अलग हो?

कबीर कर्लजुग आई करी..., कीये बहुत जो मीत |
जजन ददलबंध्या एक सू..., ते सुखु सोवै तनचीतं ||

इस कलयग मेंु , लोग कई दोस्त बनाते हैं। जो लोग अपने मन को भगवान को अवपषत करते हैं वे बबना ककसी थचतं ा के सो सकते हैं।

कामी अर्म नॅ ब्वेयी..., ववर् ही कौ लई सोढी | कुबुद्थध ना
जाई जीव की..., भावै स्वमभ रहौ प्रमोथध ||

वासना का आदमी अमत की तरह नहीं जीता। वह हमेशा जहर खोजता है। भले ही ृ भगवान र्शव स्वयं मखष को उपदेश देते हों ू , मखष अपनी मू खषता से बाज नहीं आता। ू

कामी लज्या ना करई..., मन माहे अहीलाड | नींद ना
मगई संतरा..., भूख ना मगई स्वाद ||

जनु न की चपेट में आए व्यजतत को शमष नहीं आती। वह जो बहू ुत नींद में है, बबस्तर की परवाह नहीं करता है और जो बहुत भखा हू , वह अपने स्वाद के बारे में परेशान नहीं है।

ग्यानी मूल गवैया..., आपन भये करता |
ताते संसारी भला..., मन मे रहै डरता ||

एक व्यजतत जो सोचता है कक उसने ज्ञान प्राप्त कर र्लया है, उसने अपनी जडें खो दी हैं। अब वह सोचता है कक वह ईचवर के समान सवषशजततमान है। गहस्थ जीवन में लगा ृ व्यजतत बेहतर है तयोंकक वह कम से कम भगवान से डरता है।

इदह उदर कई करने..., जग जाच्यो तनस ्जाम | स्वामी-
पानो जो सीरी चढयो..., सयो ना एको काम ||

एक व्यजतत जो दतनया का त्याग करता है , वह खद को ददनु -रात परेशान करता है तयोंकक वह अपने भोजन के बारे में थचतंतत है। वह यह भी सोचता है कक वह स्वामी है और खद को स्वामी कहता है। इस प्रु कार वह दोनों तरीकों से हार जाता है।

स्वामी हूवा सीतका... , पैकाकार पचास । रामनाम
कांठै रह्या... , करै र्सर्ा की आस ||

स्वामी आज-कल मफ्त में ु , या पैसे के पचास र्मल जाते हैं। मतलब यह कक र्सद्थधयाँ और चमत्कार ददखाने और फैलाने वाले स्वामी रामनाम को वे एक ककनारे रख देते हैं, और र्शष्यों से आशा करते हैं लोभ में डूबकर ।

बाहर तया ददखलाये... , अंतर जवपए राम | कहा
काज संसार से... , तुझे धानी से काम ||

ककसी ददखावे की कोई जरूरत नहीं है। आपको आंतररक रूप से राम नाम का जाप करना चादहए। आपको दतनया के साथ नहीं बजकक दु तनया ु के गरु के साथ संबंध रखना चादहए।ु

Kabir Das ke Dohe with Hindi Meaning (91-100)

कर्ल का स्वामी लोर्भया... , पीतली धरी खटाई |
राज-दबारा यु ू कफराई... , ज्यू हररहाई गाई ||

इस कलयग में जो खु द को स्वामी कहता है वह लालची हो गया है। वह खट्टी वस्तु ओं ु के साथ पीतल के बतषन जैसा ददखता है। वह एक गाय की तरह शासक की सरक्षा चाहता ु है जो हरे चरागाह को देखकर भागता है।

कर्ल का स्वामी लोर्भया... , मनसा धरी बढाई | देही
पैसा ब्याज कौ... , लेखा कताष जाई ||

काली यग के स्वामी को बहु ुत सारी बडाई की उम्मीद है। वह पैसा उधार देता है और बहीखाते में व्यस्त रहता है।

ब्रह्मन गुरू जगत का... , साधु का गुरू नाही | उझी-
परझी करी मरी राह्यु ... , चाररउ बेडा माही ||

एक ब्राह्मण दतनया का गु रु हो सकता है लेककन वह एक अच्छे इंसान का गु रु नहीं है। ु ब्राह्मण हमेशा वेदों की व्याख्या के साथ शार्मल होता है और वह ऐसा करते हुए मर जाता है।

चतुराई सूवई पडी... , सोई पंजर माही | कफरी
प्रमोधाई आन कौ... , आपन समझाई नाही ||

एक तोता दोहराता है जो भी ज्ञान पढाया जाता है, लेककन वह खद को अपने वपजंु रे से मतत करने का तरीका नहीं जानता है। लोगों ने आज बहु ुत ज्ञान प्राप्त ककया है, लेककन वे खद को मु तत करने में ववफल हैं।ु

तीरथ करी करी जाग मुआ... , दंघे पानी नहाई ू |
रामही राम जापन्तदा... , काल घसीट्या जाई ||

तीथषयात्री के रूप में लोग कई स्थानों पर जाते हैं। वे ऐसे स्थानों पर स्नान करते हैं। वे हमेशा ईचवर के नाम का जाप करते हैं लेककन कफर भी, उन्हें समय के साथ मौत के घाट उतार ददया जाता है।

कबीर इस संसार को... , समझौ कई बार | पंछ जो
पकडई भेड कीू ... , उत्रय चाहाई पार ||

कबीर लोगों को यह बताने से तंग आ गए कक उन्हें मखषतापूणष तरीके से पू जा करने से ू बचना चादहए। लोगों को लगता है कक वे एक भेड की पंछ को पकडकर पारगमन के ू महासागर को पार करेंगे।

कबीर मन फुकया कफरे... , कताष हु मई धम्म | कोटी
क्रम र्सरी ले चकया... , चेत ना देखई भ्रम ||

कबीर कहते हैं कक लोग इस सोच के साथ फूले थे कक इतनी योग्यता अजजषत की जा रही है। वे यह देखने में ववफल रहते हैं कक उन्होंने इस तरह के अहंकार के कारण कई कमष बनाए हैं। उन्हें जागना चादहए और इस भ्रम को दर करना चादहए।ू

कबीर भाथी कलाल की... , बहुतक बैठे आई | र्सर सौपे
सोई पेवाई... , नही तौऊ वपया ना जाई ||

अमत की द कान में आपका स्वागत है। यहाँ पर कई बैठे हैं। ककसी के र्सर पर हाथु फेरना चादहए और एक थगलास अमत प्राप्त करना चादहए।ृ

कबीर हरी रस यो वपया... , बाकी रही ना थाकी | पाका
कलस कुम्भार का... , बहुरी ना चढाई चाकी ||

कबीर ने भजतत का रस चख र्लया है, अब भजतत के अलावा कोई स्वाद नहीं है। एक बार एक कुम्हार अपना बतषन बनाता है और उसे पका लेता है, उस बतषन को कफर से पदहया पर नहीं रखा जा सकता है।

हरी-रस पीया जातनये**... ,** जे कबहु ना जाई खुमार |
मैमन्ता घूमत रहाई**... ,** नाही तन की सार ||

जो लोग भजतत के रस का स्वाद चखते हैं, वे हमेशा उस स्वाद में रहते हैं। उनके पास अहंकार नहीं है और वे कामक सु ख के बा ु रे में कम से कम परेशान हैं।